हिन्दी–10

(पाठ्यक्रम 'ब')

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र के उत्तर

खंड 'क': अपठित बोध

1. (क) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है कि यह जिस मनुष्य के हृदय में घर बना लेती है, वह उन वस्तुओं से दुख उठाता है, जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में वह दुख भोगता है।

(ख) ईर्ष्यालु व्यक्ति के पास जो उपलब्ध होता है, वह उसका आनंद लेने के स्थान पर अधिक मिलने के विषय में सोचता रहता है। अपने अभाव पर सोचते-सोचते वह विनाश की प्रक्रिया में लग जाता है और उसका चरित्र भयंकर हो जाता है।

(ग) ईर्ष्या की बड़ी बेटी की संज्ञा निंदा को दी गई है। ईर्ष्यालु व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार वह दूसरों को नीचा गिराकर उनका स्थान प्राप्त कर सकता है।

(घ) मनुष्य के पतन का कारण उसके भीतर के गुणों-अवगुणों का हिस्सा है। कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करके अपनी उन्नति नहीं कर सकता। अपने चरित्र को निर्मल बनाकर ही वह अपनी उन्नति कर सकता है।

(ङ) ईर्ष्या का कार्य जलना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है।

(च) शीर्षक- 'ईर्ष्या'

खंड 'ख': व्यावहारिक व्याकरण

2. जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तब वह शब्द 'पद' के रूप में बदल जाता है। उदाहरण के लिए, नेहा गाती है। यहाँ 'नेहा' शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर पद में परिवर्तित हो गया।

3. (क) मैं बड़े भाई साहब की लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।

(ख) वामीरो सचेत हुई और घर की तरफ़ दौड़ी।

(ग) जैसे ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर चलीं, वैसे ही साथ में भीड़ इकट्ठी हो गई।

4. (क) मातृभक्ति – मातृ के लिए भक्ति (संप्रदान तत्पुरुष समास)
तिरंगा – तीन रंगों का समूह (द्विगु समास)

(ख) क्रोधाग्नि (कर्मधारय समास)
राधा-कृष्ण (द्वंद्व समास)

5. (क) तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था।

(ख) सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया।

(ग) हम तो दरजे में खेलते-कूदते अव्वल आ गए।

(घ) नेता जी ने भाषण दिया।

6. (क) केवल खयाली पुलाव बनाने से काम नहीं चलेगा, मेहनत भी करनी पड़ती है।

(ख) यदि सभी अपनी खिचड़ी अलग पकाने लगें, तो देश की उन्नति नहीं हो सकती।

(ग) अपना अंधों में काना राजा श्याम अपने छोटे भाई को पढ़ा रहा है।

(घ) बेचारे ने जबसे होश सँभाला है गृहस्थी की चिंता मे फँस गया है।

खंड 'ग' : पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक

7. (क) अविनाश बाबू बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री थे। श्रद्धानंद पार्क में झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया था। पुलिस के मन में आंदोलनकारियों के प्रति कोई नरमी नहीं थी। उन्होंने लोगों को मारा और हटा दिया।

(ख) तताँरा लकड़ी की एक तलवार को हमेशा अपनी कमर में बाँधे रखता था। वह तलवार का प्रयोग सबके सामने नहीं करता था। लोगों का मानना था कि उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्ति थी। वे सोचते थे कि तताँरा अपने सभी साहसिक कारनामों को उसी तलवार के कारण ही कर पाता है।

(ग) टी-सेरेमनी में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता था। इसका कारण यह था कि एक तो स्थान बहुत छोटा होता है, दूसरा इस सेरेमनी का उद्देश्य है– शांतिमय वातावरण में समय बिताना।

(घ) जिस प्रकार शुद्ध सोने में किसी प्रकार की कोई मिलावट नहीं होती, उसी प्रकार शुद्ध आदर्शों पर व्यावहारिकता हावी नहीं होती। जिसमें पूरे समाज की भलाई छिपी हुई हो तथा जो समाज के शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम हो, वही शुद्ध आदर्श है।

8. सालाना परीक्षा में लेखक तो अव्वल आ गए लेकिन भाई साहब फिर फेल हो गए। कक्षा में प्रथम आने पर लेखक को खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने कठोर परिश्रम किया था परंतु बेचारे फेल हो गए। लेखक को उन पर दया आती थी। अब लेखक और बड़े भाई साहब के बीच में केवल एक कक्षा का अंतर रह गया था। अब भाई साहब व्यवहार में कुछ नरम पड़ गए थे। वे समझने लगे थे कि अब मुझे डाँटने का अधिकार नहीं रहा। अब लेखक के मन मे यह बात बैठ गई थी कि वह पढ़े या न पढ़े, पास ज़रूर हो जाएगा। इससे लेखक की स्वच्छंदता बढ़ गई थी। अब वह पढ़ने-लिखने की अपेक्षा सारा ध्यान खेल-कूद में लगाता था। उसके मन में बड़े भाई के प्रति आदर और उनसे डरने की भावना कम होती जा रही थी।

अथवा

सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण थी। भारी पुलिस-व्यवस्था के बावजूद स्त्रियों के दल अनेक जगहों से जुलूस बनाकर सभास्थल की ओर बढ़ रहे थे। मारवाड़ी बालिका विद्यालय में झंडोत्सव मनाया गया, जिसमें जानकी देवी और मदासला बजाज जैसी स्त्रियों ने भाग लिया। मोनुमेंट पर भी बड़ी संख्या में स्त्रियों ने निडर होकर झंडा फहराया। सरकारी कानून का उल्लंघन कर लगभग 105

स्त्रियों ने अपनी गिरफ्तारी दी। पुलिस ने जुलूस में भाग लेने वाली स्त्रियों पर भी दमन किया। इन सबके बावजूद भी स्त्रियाँ लाल बाज़ार तक आगे बढ़ती रहीं।

9. (क) कवयित्री मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त एवं उपासक थीं। उन्होंने अपने प्रभु के दयालु स्वभाव की कहानियाँ सुन रखी थीं। मीरा जानती थीं कि उनके प्रभु के लिए उनकी पीड़ा हरना कठिन कार्य नहीं है। उन्होंने तो इस प्रकार के अनेक कार्य पहले भी किए हैं। श्रीकृष्ण उनकी पुकार को शीघ्र सुनें, इसलिए मीरा ने उनकी क्षमताओं का वर्णन कराया।

(ख) सुबह-शाम कंपनी बाग में बहुत-से सैलानी आते हैं। कंपनी बाग में रखी तोप से उन्हें पता चलता है कि यह ईस्ट इंडिया कंपनी के ज़माने की है। यह एक विशाल तोप है, जिसने अपने ज़माने में कितने ही सूरमाओं की धज्जियाँ उड़ा दी थीं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह तोप महत्वपूर्ण है।

(ग) 'कर चले हम फ़िदा' कविता में 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध का मर्मस्पर्शी वर्णन है। यह कविता एक और भारतीयों के साहस तथा वीरता का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करती है, साथ ही उनके त्याग एवं बलिदान की गाथा को भी दोहराती है। यह कविता अपने रचनाकाल में जितनी प्रासंगिक थी, उतनी आज भी है। यह कविता वीरों का उत्साह बढ़ाने और युवाओं में राष्ट्रभक्ति प्रगाढ़ करने के लिए अधिक प्रासंगिक है।

10. आत्मत्राण का अर्थ है—आत्मा का त्राण अर्थात आत्मा या मन के भय का निवारण, उससे मुक्ति। कवि चाहता है कि जीवन में आने वाले दुखों को वह निर्भय होकर सहन करे। त्राण शब्द का प्रयोग इस कविता के संदर्भ में बचाव, आश्रय और भय निवारण के अर्थ में किया जा सकता है। दुख न मिले, ऐसी प्रार्थना वह नहीं करता बल्कि मिले हुए दुखों को सहने, उन्हें झेलने की शक्ति के लिए प्रार्थना करता है कि उसका बल पौरुष न हिले। वह सदा बना रहे और कोई भी कष्ट वह धैर्य से सह ले इसलिए यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

अथवा

इस कविता में कवि मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास कर रहा है। कवि कहता है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है। असली मनुष्य वही है, जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले। मनुष्य वही कहलाता है, जो दूसरों की चिंता करे। पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं, जिन्हें उनकी त्याग-भावना के लिए आज भी याद किया जाता है। कवि कहना चाहता है कि यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए, आपसी समझ को बनाए रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए।

11. (क) हरिहर काका के मामले में गाँववालों के दो गुट बँट चुके थे। एक गुट की राय थी कि हरिहर काका को ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर देनी चाहिए। इस गुट में वैसे लोग थे, जिनके लिए ठाकुरबारी पेट-पूजा करने का माध्यम थी। उनमें कुछ ऐसे भी लोग थे, जो वास्तव में धार्मिक और अंधविश्वासी प्रवृत्ति के थे। दूसरे गुट की राय थी कि हरिहर काका की ज़मीन पर उनके भाइयों का हक बनता है। ये लोग प्रगतिशील और व्यावहारिक खयालों के थे।

(ख) लेखक ने सस्ता सौदा उस समय के मास्टरों द्वारा की जाने वाली पिटाई को कहा है। इसका कारण यह है कि उस समय के अध्यापक गरमी की छुट्टियों के लिए दो सौ सवाल दिया करते थे। बच्चे इसके बारे में तब सोचते थे, जब उनकी पंद्रह-बीस छुट्टियाँ बचती थीं। वे सोचते थे कि एक दिन

में दस सवाल करने पर भी बीस दिन में काम पूरा हो जाएगा। दस दिन छुट्टियाँ और बीतने पर वे बीस सवाल प्रतिदिन पूरा करने की बात सोचते पर काम न करते। अंत में मास्टरों की पिटाई को सस्ता सौदा समझकर उसे ही स्वीकार कर लेते।

खंड 'घ': लेखन

12. (ख) भ्रष्टाचार मुक्त भारत

हमारा देश विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार का सामना कर रहा है। यह समस्या आंतरिक रूप से हमारे देश को खा रही है। भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट+आचार 'भ्रष्ट' यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा 'आचार' का अर्थ है– आचरण। भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है– वह आचारण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। जब कोई व्यक्ति न्याय-व्यवस्था के मान्य नियमों के विरुद्ध जाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गलत आचरण करने लगता है, तो वह व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है। यह एक संक्रामक रोग की तरह है। समाज में विभिन्न स्तरों पर फैले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर दंड-व्यवस्था की जानी चाहिए। आज भ्रष्टाचार की स्थिति यह है कि व्यक्ति रिश्वत के मामले में पकड़ा जाता है और रिश्वत देकर ही छूट जाता है। लोगों को इसे रोकने के लिए स्वयं में ईमानदारी विकसित करनी होगी। भारत में कोई भी चुनाव के लिए खड़ा हो सकता है और अपना राजनीतिक दल बना सकता है। पात्रता मानदंड में किसी व्यक्ति की शैक्षणिक योग्यता शामिल नहीं है। कुछ नेता ऐसे भी हैं जिनका पिछला रिकॉर्ड अपराधी प्रवृत्ति का है। जब देश ऐसे लोगों द्वारा नियंत्रित किया जाएगा, तो भ्रष्टाचार होना लाज़मी है। इसके लिए केवल वे अभ्यर्थी, जो शैक्षिक मानदंडों को पूरा करते हैं और जिनका रिकॉर्ड साफ़-सुथरा है, उन्हें चुनाव लड़ने की अनुमति दी जानी चाहिए। हमारे देश को इस बुरी प्रथा से मुक्त कराने के लिए हमें एकजुट होना चाहिए और ईमानदारी से काम करना चाहिए।

13. राजौरी गार्डन

नई दिल्ली

4 अगस्त, 20XX

संपादक

हिंदुस्तान

बाहदुरशाह ज़फ़र मार्ग

नई दिल्ली

विषय: योग-शिक्षा का महत्व

महोदय

मैं शिखा शर्मा आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र की नियमित पाठिका हूँ। आपके प्रसिद्ध समाचार-पत्र के माध्यम से मैं विद्यालयों में योग-शिक्षा के महत्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ।

विद्यालयों में योग-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगे। योग-शिक्षा उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती है।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करें और लोगों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।

सधन्यवाद

भवदीया

क. ख. ग.

14.

रेनबो पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

सूचना

10 मार्च, 20XX

वाद-विवाद प्रतियोगिता

आप सभी को यह सूचित किया जाता है कि दिनांक 30 मार्च, 20XX को विद्यालय में 'प्रदूषण का मानव-जीवन पर प्रभाव' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक विद्यार्थी इस प्रतियोगिता के लिए अपना नाम दिनांक 15 मार्च, 20XX तक हिंदी शिक्षिका श्रीमती मधु शर्मा के पास दे सकते हैं।

सचिव

साहित्य क्लब

रेनबो पब्लिक स्कूल

15.

विशाल: मित्र, क्या तुम ग्लोबल वॉर्मिंग के विषय में जानते हो?

शशांक: हाँ, जब धरती का तापमान बढ़ जाता है और धरती गरम होने लगती है, तो उसे ग्लोबल वॉर्मिंग कहते हैं।

विशाल: इससे क्या होता है?

शशांक: पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों के लिए हानिकारक है, जो इसे सहन नहीं कर पाते और नष्ट हो जाते हैं। आने वाले वर्षों में यह हमारे लिए भी भयावह सिद्ध हो सकता है।

विशाल: ग्लोबल वॉर्मिंग के क्या कारण हैं?

शशांक: पृथ्वी के वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है, जो पृथ्वी का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है।

विशाल: सही कहते हो। इसके लिए कई मानवीय कारण भी ज़िम्मेदार होते हैं। विभिन्न संसाधनों को एकत्रित करने के लिए वनों को नष्ट किया जा रहा है। इस कारण भी प्रदूषण बढ़ रहा है और पृथ्वी गरम होती जा रही है।

शशांक: हाँ विशाल, सही कहा तुमने। वैज्ञानिकों का कहना है कि 2050 तक धरती का तापमान 4°-5° से. और अधिक हो जाएगा।

विशाल: क्या इसे रोकने के लिए कुछ किया जा रहा है?

शशांक: हाँ, इसे रोकने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई प्रयास किए जा रहे हैं।

16.

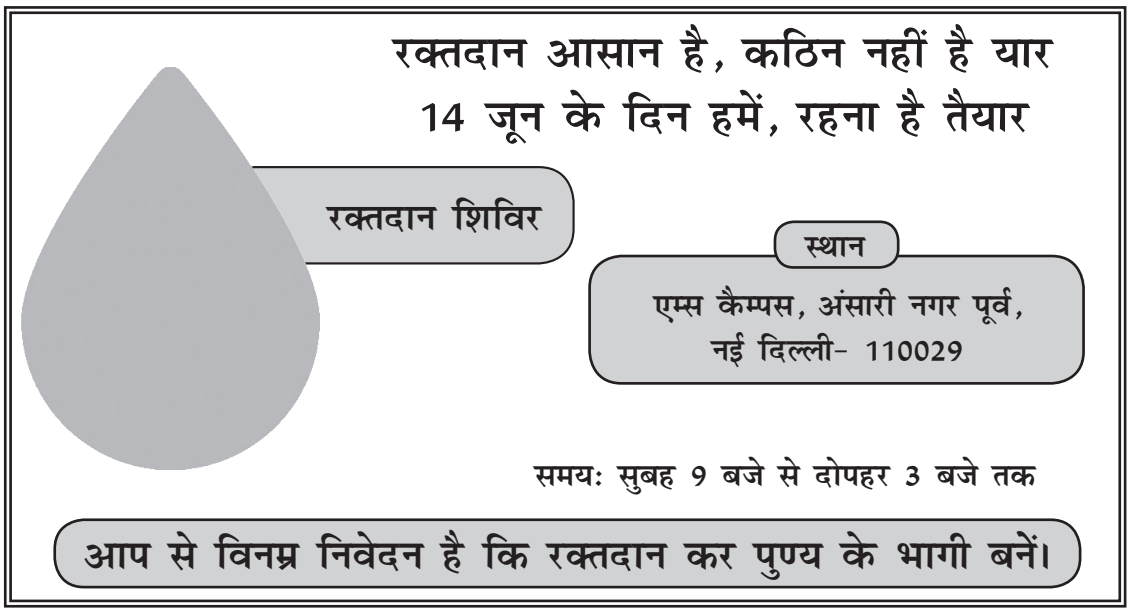
रक्तदान आसान है, कठिन नहीं है यार
14 जून के दिन हमें, रहना है तैयार
रक्तदान शिविर
स्थान
एम्स कैम्पस, अंसारी नगर पूर्व,
नई दिल्ली- 110029
समयः सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक
आप से विनम्र निवेदन है कि रक्तदान कर पुण्य के भागी बनें।